आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 13 अंक : 7 मार्च, 2026 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास

कुलगुरु सन्देश

वैज्ञानिक एवं आधुनिक पशुपालन ही कृषकों की समृद्धि का मार्ग

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर प्रदेश एवं देश के पशुपालकों के समग्र विकास हेतु निरंतर प्रतिबद्ध है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल पशु चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान तक सीमित नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक तकनीकों को गाँव–गाँव तक पहुँचाकर किसानों की आय में वृद्धि तथा उनके जीवन स्तर में सुधार लाना भी है। पशुपालन हमारे ग्रामीण जीवन, कृषि प्रणाली तथा अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग है। वर्तमान समय में जब जलवायु परिवर्तन, बढ़ती लागत एवं बाजार की अनिश्चितताओं के कारण कृषि क्षेत्र चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब पशुपालन किसानों के लिए अतिरिक्त एवं स्थिर आय का विश्वसनीय स्रोत बनकर उभरा है। दुग्ध उत्पादन, बकरी पालन, भेड़ पालन, ऊँट पालन, कुक्कुट पालन तथा अन्य पशुधन आधारित गतिविधियाँ ग्रामीण परिवारों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती हैं। यदि इन्हें वैज्ञानिक पद्धति एवं व्यवसायिक दृष्टिकोण से अपनाया जाए तो यह आय वृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकता है। दुग्ध क्षेत्र के सुदृढ़ीकरण में राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड की भूमिका सराहनीय रही है, जिसने सहकारी ढाँचे के माध्यम से लाखों पशुपालकों को संगठित कर सशक्त बनाया है। इसी प्रकार पशु रोग नियंत्रण एवं अनुसंधान के क्षेत्र में भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित तकनीकें पशुधन की उत्पादकता बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो रही हैं। इन वैज्ञानिक सुझावों को अपनाकर किसान उत्पादन की गुणवत्ता एवं मात्रा दोनों में वृद्धि कर सकते हैं। सफल पशुपालन हेतु उन्नत नस्लों का चयन, संतुलित एवं पौष्टिक आहार, स्वच्छ पेयजल, उपयुक्त आवास व्यवस्था, नियमित टीकाकरण तथा समय–समय पर स्वास्थ्य परीक्षण अत्यंत आवश्यक हैं। रोगों की रोकथाम, स्वच्छता और जैव–सुरक्षा उपायों का पालन करने से पशुधन स्वस्थ रहता है और उत्पादन निरंतर बना रहता है। साथ ही पशुपालकों को आधुनिक प्रबंधन तकनीकों एवं डिजिटल माध्यमों से बाजार की जानकारी प्राप्त कर अपने उत्पादों का उचित मूल्य सुनिश्चित करना चाहिए। पशुपालन को परंपरागत कार्य न मानकर एक संगठित एवं लाभकारी उद्यम के रूप में विकसित करना समय की आवश्यकता है। दुग्ध एवं दुग्ध उत्पादों जैसे घी, पनीर, दही आदि का मूल्य संवर्धन कर स्थानीय एवं क्षेत्रीय बाजारों में विक्रय करने से आय में उल्लेखनीय वृद्धि संभव है। स्वयं सहायता समूहों एवं सहकारी समितियों के माध्यम से सामूहिक प्रयास किसानों की आर्थिक स्थिति को और अधिक सुदृढ़ बना सकते हैं। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा समय–समय पर पशुपालन प्रशिक्षण कार्यक्रम, पशु स्वास्थ्य शिविर, जागरूकता अभियान तथा तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि इन कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी निभाएँ और वैज्ञानिक पशुपालन को अपनाकर अपने जीवन में समृद्धि का नया अध्याय जोड़ें। आपकी मेहनत, लगन और जागरूकता ही सशक्त ग्रामीण अर्थव्यवस्था तथा आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला है। आइए, हम सभी मिलकर आधुनिक, वैज्ञानिक एवं टिकाऊ पशुपालन को अपनाएँ और समृद्ध भविष्य की ओर अग्रसर हों।

डॉ. सुमंत व्यास

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

स्वदेशी पशुधन संरक्षण पर दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के कुक्कुट विज्ञान विभाग द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर.), नई दिल्ली द्वारा वित्त पोषित दस दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम "सतत् कृषि एवं देशी पशुधन संरक्षणः सुरक्षित भविष्य का आधार" विषय पर दिनांक 12–21 फरवरी को आयोजित हुआ। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास ने बताया कि वर्तमान समय में ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सुदृढीकरण के लिए टिकाऊ पशुपालन की अति आवश्यकता है, जिसके लिए हमारा स्वदेशी पशुधन एक उपयुक्त संसाधन है। अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय बीकानेर प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने राज्य की देशी गोवंश नस्लों की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए ग्रामीण अर्थव्यवस्था में इन पशुधन की महत्वपूर्ण भूमिका को बताया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. अजित सिंह यादव, सहायक निदेशक शिक्षा, गुणवत्ता एवं सुधार (ई.क्यू.ए. एण्ड आर.) आई.सी.ए.आर. ने अपने संबोधन में कहा कि राजस्थान पशुओं की विभिन्न नस्लो के संरक्षण का प्रमुख केन्द्र है। डॉ. यादव में बताया कि भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन कार्यक्रम के तहत देश के पशुधन का डिजिटल रिकार्ड तैयार किये जाने की योजना है। वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने बताया कि हमें पशुधन के संवर्धन हेतु और अधिक प्रयास करने होंगे ताकि इनकी गुणवत्ता एवं उत्पादकता का पूर्ण उपयोग किया जा सके। कार्यकारी अधिष्ठाता एवं आई.सी.ए.आर. नोड़ल अधिकारी डॉ. राजेश कुमार धूड़िया ने प्रशिक्षणार्थियों को अर्जित ज्ञान को पशुधन संरक्षण एवं संवर्धन हेतु उपयोग करने हेतु निर्देशित किया। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. अरूण कुमार झीरवाल ने बताया कि इस प्रशिक्षण में देश के 7 राज्यों से 17 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन प्रशिक्षण सम्वयक डॉ. अमित चौधरी ने किया।

गौशाला प्रबंधन प्रशिक्षण कार्यक्रम

गौशालाओं को यंत्रीकरण एवं डिजिटलीकरण से आत्मनिर्भर बना सकते है : डॉ.एस.के.शर्मा, सहायक महानिदेशक, आई.सी.ए.आर.

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय और निदेशालय गोपालन, राजस्थान, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में पंजीकृत गौशालाओं के प्रबंधकों एवं डेयरी संचालकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 23–25 फरवरी को आयोजित हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. एस.के. शर्मा, सहायक महानिदेशक (आई.सी.ए.आर.) ने डेयरी संचालकों एवं प्रबंधकों से अपने विचार साझा करते हुए कहा कि डेयरी व्यवसाय एवं गौशालाओं को आत्मनिर्भर बनाने हेतु गौशालाओं का यंत्रीकरण एवं डिजिटल रूपांतरण किया जाना चाहिए, ताकि गौशालाओं के उत्पादन एवं लागत की सूचनाओं का संधारण समय–समय पर किया जा सके। डॉ. एस.के. शर्मा ने कहा कि गौशालाओं को "स्वयं टिकाऊ मॉडल" आधारित बनाने एवं अपनाने की जरूरत है ताकि गौशालाएं दान–दाताओं और सरकार पर कम से कम निर्भर हो सके। वेटरनरी विश्वविद्यालय के के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि देशी गौवंश ने संरक्षण एवं सवर्धन भी आज महत्ती आवश्यकता है। गौशाला प्रबंधक गौवंशो के संरक्षण का कार्य कर रहे है लेकिन वैज्ञानिक तकनीकों और उपयुक्त ईलाज के माध्यम से गौवंश की उत्पादकता बढ़ानी चाहिए। कुलगुरु ने गौशालाओं में रिकॉर्ड संधारण तथा कृत्रिम गर्भाधान के माध्यम से स्वावलंबी बनाने हेतु सुझाव दिये। वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर के अधिष्ठाता प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने कहा कि गाय के दुग्ध के अलावा गोबर, गोमूत्र की भी बहुत मांग है। गौवंश उत्पादों के मूल्य सवंर्धित करके गौशालाओं को टिकाऊ और आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में बीकानेर, हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिले के पंजीकृत गौशालाओं के प्रबंधको, डेयरी संचालक एवं प्रतिनिधियों को विशेषज्ञों द्वारा राज्य की गौवंश की विभिन्न नस्लों, पशुओं में नस्ल सुधार, दूध उत्पादन बढ़ाने के तरीकों, पंचगव्य के औषधीय गुणों और उसके व्यावसायिक उपयोग और साल भर हरा चारा उपलब्ध कराने की तकनीक पर विस्तार से जानकारी प्रदान की गई। प्रशिक्षको को जिले की गौशालाओं एवं विश्वविद्यालय के पशु अनुसंधान केन्द्रों का भ्रमण भी करवाया गया। प्रशिक्षण के दौरान "प्रशिक्षण संदर्शिका" का विमोचन भी किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक अतिरिक्त निदेशक प्रसार डॉ. देवीसिंह रहे।

राज्य स्तरीय पशु मेले में वेटरनरी विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी का आयोजन

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा लूणकरणसर में जिला प्रशासन एवं पशुपालन विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 7 से 12 फरवरी तक आयोजित राज्य स्तरीय पशु मेले में राजुवास प्रदर्शनी स्टॉल आयोजित की गई। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि प्रदर्शनी के दौरान विश्वविद्यालय की विभिन्न गतिविधियों एवं कार्यों को पोस्टर एवं मॉडल के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित राजुवास स्टॉल पर गौपालकों व आमजन का रुझान रहा। विश्वविद्यालय द्वारा प्रदेश की देशी गौवंश के संवर्धन, उन्नयन व वैज्ञानिक तरीके से पालन की जानकारी गौ प्रेमी, किसानों–पशुपालकों एवं आगुंतकों को प्रदान की गई। प्रदर्शनी के आयोजन में डॉ. संजय सिंह एवं डॉ. दिवाकर का सहयोग रहा।

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबन्धन एवं निस्तारण पर पशुधन निरीक्षकों ने लिया प्रशिक्षण

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केंद्र, राजुवास, बीकानेर द्वारा बीकानेर संभाग के विभिन्न पशु चिकित्सालयों व पशु उपकेन्द्रों पर कार्यरत पशुधन निरीक्षकों का जैव अपशिष्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण 23 फरवरी को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. कुलदीप चौधरी अतिरिक्त निदेशक, पशुपालन विभाग, क्षेत्र बीकानेर ने प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि पशुओं के रोग निदान और उपचार कार्यों में चिकित्सकीय अपशिष्ट का सही निस्तारण मानव और पशु जगत के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है साथ ही उन्होने सभी प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण के दौरान सीखे गए कार्यो को अन्य पशु चिकित्सकों, पशुधन सहायकों, संबन्धित स्टाफ एवं प्रयोगशाला सहायक तक जन जागरूकता के रूप में पहुंचाने के लिए प्रेरित किया। प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए केन्द्र की प्रमुख अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने कहा कि जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित निस्तारण एवं प्रबंधन के प्रति जागरूगता वर्तमान परिपेक्ष्य में अति आवश्यक हो गई है। पशुचिकित्सा क्षेत्र में कार्यरत कर्मचारियों को इसका प्रायोगिक ज्ञान होना बहुत आवश्यक है ताकि वे स्वयं को एवं समाज को संक्रामक बीमारियों के प्रकोप से बचा सके तथा वातावरण को प्रदूषित होने से भी बचा सके। केन्द्र के सह– अन्वेषक डॉ. देवेंद्र चौधरी ने पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के पृथक्करण का प्रायोगिक विवरण दिया एवं डॉ. वैशाली, सहायक आचार्य ने पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के निस्तारण विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। इस प्रशिक्षण समारोह में डॉ. हेमलता का सहयोग रहा।

पशु जैव विविधता संरक्षण पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के पशु जैव विविधता संरक्षण केंद्र द्वारा आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम का 27 फरवरी को सम्पन्न हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. सुमंत व्यास ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने हेतु स्थानीय पशु जैव विविधता का संरक्षण ही एकमात्र विकल्प है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व सहायक कमांडेंट, बी.एस.एफ. अंतरराष्ट्रीय वाइल्ड लाइफ फिल्म मेकर एवं बायोलॉजिस्ट अमित गोस्वामी ने इकोसिस्टम की बारीकियों को विस्तार से समझाया और बताया कि जैव विविधता हमारे फेफड़ों की तरह है, जो हमें जीवित रखती है। अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर डॉ. बी.एन. श्रृंगी ने प्रतिभागियों को जैव विविधता संरक्षण का लाभ सीधे पशुपालकों तक पहुचाने की अपील की एवं बताया कि पशु चिकित्सक इस कड़ी में सबसे महत्वपूर्ण सेतु हैं, जो विज्ञान को समाज से जोड़ते हैं। कार्यक्रम के अंत में केन्द्र की प्रभारी डॉ. रजनी अरोड़ा ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए केंद्र की योजनाओं पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के दौरान डॉ संजय शर्मा उप निदेशक पशुपालन विभाग भी मौजूद रहे एवं सहायक आचार्य डॉ. राजेश नेहरा और डॉ. राकेश रंजन ने प्रतिभागियों को व्याख्यान दिया। कार्यक्रम में डॉ. बसंत, डॉ. नरसी राम गुर्जर और डॉ. स्नेहा चौधरी का सहयोग रहा।

कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान की अनुसंधान सलाहकार समिति के अध्यक्ष मनोनीत

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के केन्द्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान (इज्जतनगर) की अनुसंधान सलाहकार समिति के अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। यह समिति तीन वर्ष के लिए संस्थान की शोध गतिविधियों एवं गुणवत्ता हेतु सुझाव एवं सलाहकार का कार्य करेगी।

पशुपालक सम्मान योजना 2025–26 आवेदन आमंत्रित, 31 मार्च अंतिम तिथि

पशुपालन निदेशालय, जयपुर द्वारा वर्ष 2025–26 के लिए पशुपालक सम्मान योजना अंतर्गत प्रगतिशील पशुपालकों से आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। योजना का उद्देश्य उत्कृष्ट कार्य करने वाले पशुपालकों को प्रोत्साहित करना है। योजना के तहत प्रत्येक पंचायत समिति स्तर पर एक पशुपालक का चयन किया जायेगा। पंचायत समिति स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त पशुपालकों में से दो का चयन जिला स्तर पर तथा जिला स्तर से चयनित पशुपालकों में से दो का चयन राज्य स्तर पर किया जायेगा। चयनित पशुपालकों को पंचायत समिति स्तर पर 10 हजार रुपये, जिला स्तर पर 25 हजार रुपये तथा राज्य स्तर पर 50 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जाएगी। इच्छुक पशुपालक निर्धारित आवेदन प्रपत्र में 31 मार्च 2026 तक पशुपालन विभाग में आवेदन कर सकते है। अंतिम तिथि के बाद प्राप्त आवेदनों पर विचार नहीं किया जाएगा। योजना की विस्तृत जानकारी एवं आवेदन पत्र पशुपालन विभाग की वेबसाइट www.animalhusbandry.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध है। अधिक जानकारी के लिए पशुपालन विभाग के संबंधित जिला कार्यालय या निकटवर्ती राजकीय पशुचिकित्सालय से सम्पर्क किया जा सकता है।

पशुपालन नए आयाम
फार्म–4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	: बीकानेर (राज.)
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	प्रकाशक का नाम	: प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	: हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:
	पता	: निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर
4.	मुद्रक का नाम	: प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	: हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:
	पता	: निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
5.	संपादक का नाम	: प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	: हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:
	पता	: निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्रों के स्वामी हो तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	: लागू नहीं

मैं प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 01–3–2026

(प्रो. {डॉ.} राजेश कुमार धूड़िया)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 18 फरवरी को केन्द्र परिसर में तथा 24 एवं 25 फरवरी को गांव मिर्जापुरा एवं 6 एफ गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 199 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा दिनांक 18 एवं 27 फरवरी को गांव बड़ली रोड पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 48 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा दिनांक 28 फरवरी को गांव रतपुरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 20 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा दिनांक 11 एवं 23 फरवरी को गांव गोल एवं मकरोड़ा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 52 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा दिनांक 6 फरवरी को गांव मसानिया में तथा दिनांक 11 फरवरी को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 65 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ द्वारा दिनांक 9, 13, 16, 21, 23 एवं 27 फरवरी को गांव ढाणी कुमाहरन, बोघेरा, चलकोई, थेलासर, जैतासर एवं ढाणी मुनीमजी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 138 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा दिनांक 18 फरवरी को गांव नापनिया में तथा दिनांक 25 फरवरी को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 50 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 4–7 एवं 9–13 फरवरी को केन्द्र परिसर में तथा दिनांक 25 फरवरी को गांव गानियासर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 113 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

किलनी से फैलने वाला बबेसियोसिस : पशुधन के लिए गंभीर खतरा

बबेसिओसिस पशुओं में पाया जाने वाला एक रोग है, जो रक्त में रहने वाले एककोशिकीय प्रोटोजोआ के कारण होता है। यह मलेरिया के समान रोग है और इसका कारण बबेसिया नामक प्रोटोजोआ का संक्रमण है। स्तनधारी जीवों में ट्रीपेनोसोमा के बाद बबेसिया दूसरा सबसे अधिक पाया जाने वाला रक्त परजीवी है। मनुष्यों में यह रोग बहुत ही कम देखा जाता है।

रोग का प्रसार :

बबेसियोसिस रोग मुख्य रूप से गाय और भैंस जैसे पशुओं में खून चूसने वाली किलनी के माध्यम से फैलता है। विशेष रूप से रिफिसिफेलस (बूफिलिस) माइक्रोप्लस इस रोग का प्रमुख वाहक है। जब यह किलनी किसी ऐसे पशु का रक्त चूसती है जो बबेसिया प्रोटोजोआ से संक्रमित होता है, तो यह परजीवी किलनी के शरीर में प्रवेश कर जाता है और उसके भीतर विकसित होने लगता है, इसके बाद, जब यही संक्रमित किलनी अपने जीवन–चक्र की विभिन्न अवस्थाओं (लार्वा, निम्फ या वयस्क) में किसी स्वस्थ पशु का रक्त चूसती है, तो वह परजीवी उस स्वस्थ पशु के रक्त में पहुँच जाता है। इस प्रकार संक्रमण फैलता है और नए पशु में बबेसियोसिस रोग उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार, किलनी इस रोग के संचरण में एक महत्वपूर्ण जैविक वाहक की भूमिका निभाती है।

लक्षण :

- ❖ बबेसियोसिस से ग्रसित पशुओं में कई गंभीर लक्षण दिखाई देते हैं, जो रोग की तीव्रता के अनुसार बढ़ सकते हैं। इस रोग में सबसे प्रमुख लक्षण तेज बुखार है, जिसमें पशु का शरीर तापमान लगभग 105–107° फेरेनहाइट तक पहुँच सकता है।
- ❖ रोग के दौरान लाल रक्त कोशिकाएँ तेजी से नष्ट होती हैं, जिसके कारण हीमोग्लोबिन मूत्र के साथ बाहर निकलने लगता है। इस स्थिति को हीमोग्लोबिनुरिया कहते हैं, और इसके परिणाम स्वरूप पशु का मूत्र कॉफी के रंग जैसा लाल या गहरा भूरा दिखाई देता है।
- ❖ लगातार लाल रक्त कोशिकाओं के विनाश से पशु में गंभीर खून की कमी (एनीमिया) हो जाती है। खून की कमी के कारण पशु कमजोर, सुस्त और थका हुआ दिखाई देता है। इसके साथ ही, शरीर में बिलीरुबिन की मात्रा बढ़ने से पीलिया (जॉन्डिस) के लक्षण भी प्रकट हो सकते हैं, जिनमें आंखों की सफेदी और मसूड़े पीले पड़ जाते हैं।
- ❖ अन्य सामान्य लक्षणों में पशु को भूख कम लगना या पूरी तरह बंद हो जाना, दुग्ध उत्पादन में भारी गिरावट, अत्यधिक कमजोरी, सुस्ती तथा कभी–कभी पतला दस्त शामिल हैं।
- ❖ यदि रोग की पहचान समय पर न हो और उचित उपचार न दिया जाए, तो स्थिति गंभीर हो सकती है और अंततः पशु की मृत्यु भी हो सकती है। इसलिए प्रारंभिक लक्षण दिखाई देते ही तुरंत पशु चिकित्सक से परामर्श लेना अत्यंत आवश्यक है।

रोग का उपचार :

- ❖ बबेसियोसिस के उपचार हेतु विशिष्ट एंटी–प्रोटोजोआ औषधियों का उपयोग पशुचिकित्सक की देखरेख में किया जाना चाहिए। इस रोग के प्रभावी उपचार के लिए डिमिनेजन एसीट्यूरेट इंजेक्शन के रूप में दिया जाता है।
- ❖ सहायक उपचार के रूप में पशुचिकित्सक की सलाह से लिवर टॉनिक, रक्तवर्धक औषधियाँ तथा डेक्सट्रोज सलाइन का उपयोग किया जाना चाहिए, जिससे पशु की कमजोरी दूर हो और शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हो।
- ❖ बबेसियोसिस का उपचार समय पर और सही मात्रा में किया जाए तो रोग पर प्रभावी नियंत्रण संभव है। उचित दवा, सहायक उपचार तथा पशुचिकित्सकीय परामर्श से पशु को शीघ्र स्वस्थ किया जा सकता है।

रोग की रोकथाम :

बबेसियोसिस एक रक्त–परजीवी जनित रोग है, जिसका प्रसार संक्रमित पशु के रक्त से स्वस्थ पशु के रक्त तक किलनी (चमोकन) के माध्यम से होता है। इसलिए इस रोग की रोकथाम का मुख्य उपाय किलनियों का प्रभावी नियंत्रण और उन्मूलन है।

- ➢ कीटनाशक औषधियों का प्रयोग : यदि पशु के शरीर पर किलनियों की संख्या अधिक हो तो कीटनाशक दवाओं का उपयोग करना चाहिए। साथ ही, पशुशाला में भी समय–समय पर इन कीटनाशकों का छिड़काव करें।
- ➢ प्रारंभिक चरण में पशु के रोग की पहचान व उचित उपचार।
- ➢ रोगी पशु का अलगाव।
- ➢ पशुओं के शल्य चिकित्सा तथा टीकाकरण में दूषित सूई एवं औजारों का उपयोग कदापि नहीं करना चाहिए।
- ➢ पशुपालकों को अपने दुधारू पशुओं के खून की जाँच प्रत्येक तीन महीने में कराते रहने से रक्त परजीवी का पता चल जाता है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
वरिष्ठ सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सतत् भविष्य के लिए पशु मनुष्य और पर्यावरणीय स्वास्थ्य का एकीकरण

मनुष्य, पशु और पर्यावरण का स्वास्थ्य आपस में गहराई से जुड़ा हुआ है। उभरते संक्रामक रोगों, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता में कमी और खाद्य असुरक्षा के इस दौर में स्वास्थ्य के प्रति अलग–अलग दृष्किोण अब पर्याप्त नहीं है। वन हेल्थ दृष्किोण जो पशु, मनुष्य और पर्यावरणीय स्वास्थ्य को एकीकृत करता है, वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के लिए सतत स्वास्थ्य परिणाम प्राप्त करने का एक समग्र ढांचा प्रदान करता है।

स्वास्थ्य का परस्पर सम्बन्धः मनुष्य पालतू और वन्य पशुओं के साथ एक ही पारिस्थितिकी तंत्र साझा करता है और स्वच्छ वायु, जल और उपजाऊ मिट्टी जैसे पर्यावरणीय संसाधनों पर निर्भर करता है। इनमें से किसी एक घटक में गड़बड़ी होंने पर उसका प्रभाव अन्य घटकों पर भी पड़ता है। उदाहरण के लिएः

- **जूनोटिक रोग** (जैसे रेबीज, एवियन इन्फ्लुएंजा, कोविड़–19) मनुष्य–पशु संपर्क से उत्पन्न होते है।
- **पर्यावरणीय क्षरण** वाहक (वेक्टर) जीवों की पारिस्थितिकी को प्रभावित करता है जिससे मलेरिया, डेंगू जैसे रोगों का जोखिम बढ़ता है।
- **खाद्य प्रणालियां** सुरक्षित पोषण और आजीविका सुनिश्चित करने के लिए स्वस्थ पशुधन, स्वच्छ जल और सतत भूमि उपयोग पर निर्भर करती हैं।

इन अंर्तसबंधों को समझना, प्रभावी रोकथाम, तैयारी और त्वरित प्रतिक्रिया के लिए आवश्यक है।

पशु स्वास्थ्यः सार्वजनिक स्वास्थ्य की आधारशिलाः स्वस्थ पशु, सुरक्षित खाद्य आपूर्ति, स्थिर आजीविका और रोग संचरण में कमी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पशुचिकित्सा निगरानी, टीकाकरण कार्यक्रम, जैव सुरक्षा और जिम्मेदार एंटीमाइक्रोबियल उपयोग निम्नलिखित के लिए आवश्यक हैः

- जूनोटिक और सीमापार पशु रोगों की रोकथाम।
- खाद्य सुरक्षा और गुणवत्ता सुनिश्चित करना।
- एंटीमाइक्रोबियल रेजिस्टेंश को कम करना जो सभी प्रजातियों के लिए एक साझा खतरा हैं।
- पशुचिकित्सा सेवाओं को मजबूत करना और उन्हें सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों से जोड़ना प्रारभिक चेतावनी और त्वरित प्रतिक्रिया को सशक्त बनाता है।

मानव स्वास्थ्यः लाभार्थी और संरक्षकः मानव स्वास्थ्य को स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र और पशुओं से प्रत्यक्ष लाभ मिलता है, लेकिन मनुष्य स्वंय इनका संरक्षक भी है। शहरीकरण, वनों की कटाई और अत्यधिक गहन पशुपालन यदि सही ढंग से प्रंबधित न हो तो स्वास्थ्य जोखित बढ़ा सकते हैं। निम्नलिखित को बढ़ावा देने वाली एकीकृत नीतियां आवश्यक है।

- निवारक स्वास्थ्य देखभाल और रोग निगरानी
- सतत् कृषि के माध्यम से पोषण सुरक्षा
- सामुदायिक जागरूकता और व्यवहार परिवर्तन

यह सभी उपाय जोखिम को कम करने और समाज की सहनशीलता बढ़ाने में सहायक है।

पर्यावरणीय स्वास्थ्यः सततता की नींद

- पर्यावरण समस्त जीवन का आधार है। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और जैव विविधता में कमी पारिस्थितिक संतुलन और स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए गंभीर खतरे हैं। पर्यावरणीय स्वास्थ्य की रक्षा में शामिल हैं।
- जैव विविधता और वन्यजीव आवासों का संरक्षण।
- स्वच्छ जल और स्वच्छता सुनिश्चित करना।
- जलवायु–स्मार्ट और प्रकृति आधारित समाधानों को बढ़ावा देना।

स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र रोगों को नियंत्रित करते है, खाद्य प्रणालियों का समर्थन करते हैं और समुदायों को जलवायु चरम स्थितियों से बचाते हैं।

वन हेल्थ का क्रियान्वयनः प्रभावी एकीकरण के लिए विभिन्न क्षेत्रों और विषयों के बीच सहयोग आवश्यक हैः

- **नीति समन्वयः** पशु और मनुष्य स्वास्थ्य, कृषि, पर्यावरण और वन्यजीव क्षेत्रों में समन्वित नीतियां।
- **एकीकृत निगरानीः** साझा डेटा प्लेटफार्म और संयुक्त जोखिम मूल्यांकन।
- **क्षमता निर्माणः** बहुविषयक शिक्षा और प्रशिक्षण।
- **सामुदायिक सहभागिताः** स्थानीय भागीदारी और पांरपरिक/स्वदेशी ज्ञान का उपयोग।
- सार्वजनिक–निजी भागीदारी और अंर्तराष्ट्रीय सहयोग से इसके क्रियान्वयन को और मजबूती मिलती है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में वन हेल्थ का व्यावहारिक अनुप्रयोगः उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि पशु, मानव और पर्यावरणीय स्वास्थ्य एक–दूसरे से अविभाज्य रूप से जुड़े है। इस अवधारण की व्यावहारिक उपयोगिता को समझने के लिए नीचे प्रस्तुत उदाहरण वास्तविक परिस्थितियों में वन हेल्थ दृष्टिकोण के प्रभाव को दर्शाती है।

रेबीज नियंत्रण में एकीकृत दृष्टिकोण (पशु–मानव स्वास्थ्य): ग्रामीण भारत में आवारा श्वानों से फैलने वाला रेबिज एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौती रहा है। कई राज्यों में पशुचिकित्सा विभाग द्वारा श्वानों का सामूहिक टीकाकरण, नगर निकायों द्वारा जनसंख्या नियंत्रण और स्वास्थ्य विभाग द्वारा मानव पोस्ट एक्सपोजर प्रोफिलैक्सिस के समन्वित प्रयासों से रेबीज मामलों में उल्लेखनीय कमी देखी गई है। यह दर्शाती है कि पशु और मानव स्वास्थ्य सेवाओं के तालमेल से घातक जूनोटिक रोगों पर प्रभावी नियंत्रण संभव है।

ब्रुसेलोसिसः पशुधन से मानव तक संक्रमण की रोकथामः डेयरी प्रधान क्षेत्रों में ब्रुसेलोसिस के कारण पशुओं में गर्भपात और मनुष्यों में लम्बे समय तक चलने वाला ज्वर देखा गया है। पशुओं की नियमित स्क्रीनिंग और टीकाकरण, कच्चे दूध के सेवन से बचाव हेतु जन–जागरूकता तथा संयुक्त निगरानी से रोग की व्यापकता में कमी आई और किसानों की आर्थिक हानि घटी। यह उदाहरण खाद्य सुरक्षा और आजीविका संरक्षण में वन हेल्थ की भूमिका को रेंखाकित करता हैं

जलवायु परिवर्तन, वेक्टर–बोर्न और पारिस्थितिकी संरक्षणः जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा पैटर्न और तापमान में बदलाव से डेंगू, जापानी इंसेफेलाइटिस और ब्लूंटग जैसे वेक्टर–बोर्न रोगों का प्रसार बढ़ा। पर्यावरण संरक्षण, जल–जमाव प्रबंधन, वेक्टर नियंत्रण और पशु–मानव रोग निगरानी के संयुक्त प्रयासों से रोग जोखिम कम हुआ। यह उदाहरण पर्यावरणीय स्वास्थ्य के महत्व और रोग रोकथाम में उसकी केन्द्रीय भूमिका को दर्शाती है।

निष्कर्षः पशु, मानव और पर्यावरणीय स्वास्थ्य का एकीकरण कोई विकल्प नही, बल्कि एक अनिवार्यता है। वन हेल्थ दृष्टिकोण प्रतिक्रिया के बजाय रोकथाम, असुरक्षा के बजाय सहनशीलता और अलगाव के बजाय सहयोग को बढ़ावा देता है। वन हेल्थ दृष्किोण भारत जैसे विविध देश में स्वास्थ्य सुरक्षा, आजीविका संरक्षण और सतत विकास के लिए एक व्यवहार्य और आवश्यक समाधान प्रस्तुत करता है।

''समग्र स्वास्थ्य अपनाएं–टिकाऊ भविष्य पाएं''

डॉ. संध्या मोरवाल
वरिष्ठ सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

ऊँटों के नवजात बच्चों की समुचित देखभाल

ऊँटों में प्रजनन के लक्षण सर्दी के मौसम मे ही दिखाई देते हैं अथवा नवंबर से फरवरी–मार्च के महीनों तक। ऊँटों में प्रजनन की धीमी दर का मुख्य कारण ऋतु आधारित प्रजनन एवम् लंबा गर्भकाल हैं। फलस्वरूप एक ऊँटनी दो साल में एक बच्चा देती हैं। इसीलिए यह आवश्यक हैं कि गर्भवती मादा एवम् बच्चे की सही देखभाल करे जिससे बच्चा स्वस्थ पैदा हो एवम् ऊँट पालन को लाभकारी बनाया जा सके। ऊँटों के बच्चों में मृत्यु दर को कम करने के लिए यह अति आवश्यक हैं कि नवजात बच्चों के रख–रखाव का समुचित प्रबंध कैसे करे, जिससे उन्हें अकाल मृत्यु से बचाकर, ऊँट पालन को और अधिक लाभकारी बनाया जा सके।

गर्भावस्था में देखभाल : गर्भावस्था में बच्चे का सबसे अधिक विकास गर्भ के अंतिम काल में होता है। अतः इस अवधि में गर्भित सांड को पर्याप्त मात्रा में चारा और दाना खिलाना चाहिए। इसके अतिरिक्त चराई के अलावा करीब 1.5–2.0 किलो–ग्राम दाना अथवा हरा चारा उपलब्धता के अनुसार खिलाया जाना चाहिए। अगर हरा चारा उपलब्ध नहीं हो तो विटामिन–ए का टीका लगवाना अति आवश्यक है जिससे टोरडा, टोरडी की रतौंधी रोग से सुरक्षा की जा सके।

ब्याँत के अंतिम दिनों में ग्याभिन सांड को टोले से अलग करना : नवजात बच्चे के उचित देखभाल के लिए यह आवश्यक है कि गर्भित सांड को अंतिम माह में चरने हेतु टोले से अलग कर आसपास ही चरने भेजना चाहिए। प्रसव के अनुमानित समय के एक सप्ताह पूर्व से सांड का विशेष ध्यान रखना चाहिए। ब्याँत के समय किसी तरह की कठिनाई होने पर पशुचिकित्सक की सहायता लेना आवश्यक है। जन्म स्थान साफ व सुखा होना चाहिए। बाड़े के फर्श को कीटाणुओं से मुक्त करने के लिए 15 दिन पूर्व फर्श की गुड़ाई करके चुना तथा बी.एच.सी. पाउडर मिला देना चाहिए।

जन्म के समय बच्चों की देखभाल : बच्चें के जन्म के साथ ही मुलायम कपड़े से नाक को साफ कर देना चाहिए ताकि वह ठीक से सांस ले सके। शरीर पर लगे लिसलिसे पदार्थ को भी साफ कपड़े से हटा देना चाहिए, जिससे कि रक्त का प्रवाह ठीक से हो सके और बच्चे में स्फूर्ति आ सके। नाल को नाभि से करीब 4'' से 5'' की दूरी से काटना चाहिए एवं नाल (नाड़े) पर टिंचर आयोडीन या डिटॉल लगाना चाहिए।

- ❖ सामान्यतः जन्म के 1–2 घंटे बाद टोरडा–टोरडी स्वयं मां का दूध पीने लग जाते हैं। ब्याने के 48 घंटे बाद तक का दूध खीन्स कहलाता है। यह दूध बच्चों को अवश्य पिलाएं। खीन्स में पोषक तत्वों के साथ–साथ रोग–निरोधक एंटीबॉडीज होती हैं जो नवजात बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती है।
- ❖ बच्चें को मां का पूरा खीन्स नहीं पीने दे परंतु एक या दो थनों का ही खींस उसे पीने देवे क्योंकि दूध की मात्रा उसके पाचन शक्ति से ज्यादा होगी तो उसे दस्त हो जाएंगे। खींस की मात्रा मल देखकर जानी जा सकती है अगर मल पतला हो तो तीन थनों का दूध निकाल कर केवल एक थन का दूध पीने के लिए छोड़े।
- ❖ अधिकतर टोरडा/टोरडी का जन्म शीतकाल में दिसंबर से मार्च में ही होता है, कमजोर बच्चों को ठंड से बचाने के लिए रात्रि में नवजात बच्चों को किसी परकोटे में रखना चाहिए, जहां उन्हें सीधी ठंडी हवा से बचाया जा सके।
- ❖ ब्याँत के पश्चात पहले चार–पांच दिन बच्चे और ऊँटनी का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। ऊँटनी के आहार का पूरा ध्यान रखें। बच्चों के जन्म के तीन दिन पश्चात लगातार तीन दिन तक विटामिन ए की 1.0–1.5 मि.ली. एवं क्लोरमफेनिकॉल एक ग्राम लगवाना चाहिए इसके लगाने से रतौंधी और दस्त होने की संभावना कम हो जाती है।
- ❖ 3 माह के पश्चात सर्रा अथवा तिर्बसा रोग के बचाव हेतु टीका लगवाना चाहिए ताकि इस भयंकर बीमारी से ऊँट के बच्चों को बचाया जा सके।
- ❖ बच्चों को रोजाना थोड़ी देर के लिए ऊँटनी के साथ घूमने देना चाहिए जिससे कि बच्चा थोड़ा–थोड़ा चरना सीख जाये एवं तंदुरुस्त रह भी रहे। लगभग तीन माह के पश्चात टोरडा/टोरडी चरने लग जाता है। इस दौरान उसको मां का दूध अवश्य पिलाएं, जिससे शारीरिक वृद्धि में बढ़ोतरी अच्छी हो।

नवजात ऊँट के बच्चों को खीन्स एवं दूध पिलाकर, मातृहीन बच्चों को दूसरी ऊँटनी का दूध पिलाकर, विटामिन ए का टीका लगवाकर, बाह्य एवम् आंतरिक परजीवी से बचाव, समय पर डिवॉर्मिंग कर प्रतिकूल वातावरण से सुरक्षा कर मृत्यु दर को प्रभावी रूप से कम किया जा सकता है।

डॉ. प्रवीन बानो
सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।

सफलता की कहानी

डेयरी फार्मिंग को अपना पेशा बनाकर सफलता की कहानी लिख रहे युवा

श्रीगंगानगर जिले के गाँव मिर्जेवाला के प्रगतिशील पशुपालक श्री नवनीत सहारण पुत्र श्री राकेश सहारण अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद काफी समय तक नौकरी न मिलने के कारण नवनीत ने सोचा स्वयं का व्यवसाय शुरू करना एक बेहतर विकल्प हो सकता है। पशुपालन ऐसा ही एक सशक्त व्यवसाय है, जो मेहनत और लगन के साथ अतिरिक्त एवं स्थायी आय प्रदान करता है। नवनीत के पास 25 बीघा जमीन है। जमीन के साथ ही पशुपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाने का निर्णय लिया। इसी दौरान उन्होंने पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ द्वारा ग्राम मिर्जेवाला में आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इस प्रशिक्षण के माध्यम से उन्हें वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई तथा वे केन्द्र के वैज्ञानिकों से निरंतर जुड़े रहे। डेयरी पालन में अच्छे मुनाफे को देखते हुए उन्होंने इसे विस्तार देने का निर्णय लिया। शुरूआत में कम पशुओं से व्यवसाय शुरू किया। वर्तमान में उनके पास कुल 18 पशु हैं, जिनमें से 11 गायें दुग्ध उत्पादन कर रही हैं। वे प्रतिदिन 160 लीटर से अधिक दूध का उत्पादन कर रहे हैं। प्राथमिक उपचार भी वे केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. राजकुमार बेरवाल की सलाह लेकर स्वयं कर लेते हैं। डॉ. बेरवाल द्वारा उन्हें समय–समय पर कृमिनाशक दवाओं का उपयोग, खनिज लवण मिश्रण की उपयोगिता, टीकाकरण, ग्याभिन पशुओं की देखभाल तथा नस्ल सुधार के माध्यम से दुग्ध उत्पादन बढ़ाने संबंधी आवश्यक जानकारियाँ प्रदान की जाती हैं। इस वैज्ञानिक मार्गदर्शन के कारण उनके डेयरी व्यवसाय में निरंतर प्रगति हुई है। पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था वे अपने खेतों से ही कर लेते हैं। नवनीत डेयरी व्यवसाय के साथ–साथ अपने खेत में ही साइलेज का उत्पादन भी कर रहे है जिससे वह अतरिक्त मुनाफा कमा रहा है। उन्होंने आजोला यूनिट भी लगा रखी है जिसका उपयोग वह अपने पशुओं के लिए कर रहे है। यह अपने पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान में सेक्स सॉर्टेड सीमेन के उपयोग से अच्छी नस्ल की मादा बछिया प्राप्त कर रहे है। नवनीत पशुओं से मिलने वाली गोबर खाद् से वर्मीकम्पोस्ट बनाकर खेत में उपयोग करते है। उनकी सफलता से प्रेरित होकर गाँव के अन्य लोग भी डेयरी व्यवसाय अपना रहे हैं। आज नवनीत ने एक सफल पशुपालक के रूप में अपनी पहचान स्थापित की है। वे अपने व्यवसाय से अत्यंत संतुष्ट हैं और इससे प्रतिवर्ष लगभग 6 से 7 लाख रुपये की आय अर्जित कर रहे हैं। अपनी सफलता का श्रेय वे अपने परिवार तथा पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ को देते हैं।

सम्पर्कः नवनीत सहारण
मिर्जेवाला, श्रीगंगानगर (मो. : 8504836888)

निदेशक की कलम से...

जैविक खेती और जैविक पशुपालन के आपसी लाभ

जैविक खेती और जैविक पशुपालन एक–दूसरे के पूरक हैं। ये दोनों प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके खेती और पशुपालन को स्थायी और पर्यावरण–मित्र बनाते हैं। जैविक खेती में रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक की जगह प्राकृतिक खाद् और जैविक उपायों का प्रयोग किया जाता है, जिससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहती है और फसल की गुणवत्ता भी बेहतर होती है। जैविक खेती में फसलों को प्राकृतिक तरीकों से स्वस्थ रखना होता है, जिससे उत्पादन प्राकृतिक और पोषण से भरपूर होता है। इसी प्रकार, जैविक पशुपालन में पशुओं को प्राकृतिक आहार, साफ–सुथरा वातावरण और रसायनों से मुक्त जीवन दिया जाता है, जिससे उनके स्वास्थ्य में सुधार होता है और उनका उत्पादन भी अधिक होता है। जैविक पशुपालन से प्राप्त गोबर और मूत्र खेतों में प्राकृतिक उर्वरक के रूप में उपयोग किए जा सकते हैं। यह मिट्टी की उपजाऊ क्षमता को बढ़ाता है और फसलों के लिए आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करता है। गोबर से बनी जैविक खाद् मिट्टी की संरचना को सुधारती है और पानी को लंबे समय तक बनाए रखने में मदद करती है। खेतों में उगाई गई जैविक फसलें पशुओं के लिए पौष्टिक आहार का स्रोत बनती हैं, जिससे उनका स्वास्थ्य बेहतर रहता है और उनकी दुग्ध या मांस उत्पादन क्षमता भी बढ़ती है। इस प्रकार खेती और पशुपालन एक–दूसरे के लिए सहायक और पूरक सिद्ध होते हैं और किसानों के लिए आय का निरंतर स्रोत बनते हैं। जैविक खेती और पशुपालन पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अधिक उपयोग से भूमि, जल और वायु प्रदूषित हो सकते हैं, जिससे मानव और पशु दोनों के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। जैविक तरीके से यह खतरा कम हो जाता है और प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग सुनिश्चित होता है। लंबे समय तक भूमि की उपजाऊ क्षमता बनी रहती है और पर्यावरण संतुलन भी संरक्षित रहता है। इसके अलावा जैविक खेती और पशुपालन किसानों को आर्थिक लाभ भी प्रदान करते हैं। उनका उत्पादन अधिक प्राकृतिक और स्वास्थ्यवर्धक होता है, जिससे बाजार में इसकी मांग बढ़ती है। जैविक उत्पादों के लिए उच्च मूल्य मिलता है जिससे किसान अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं, यह उन्हें आत्मनिर्भर बनाता है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में मदद करता है। जैविक खेती और पशुपालन का मेल किसानों को खेती और पशुपालन दोनों में कुशलता बढ़ाने और प्राकृतिक संसाधनों का सही उपयोग करने में सहायता करता है। इस प्रकार जैविक खेती और जैविक पशुपालन न केवल आर्थिक लाभ और पोषण सुनिश्चित करते हैं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, सतत कृषि और स्वस्थ जीवन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनके माध्यम से किसान अपने खेत और पशु दोनों से अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकते हैं, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और स्थायी कृषि प्रणाली सुनिश्चित कर सकते हैं। इस तरह जैविक खेती और पशुपालन का आपसी सहयोग कृषि की दुनिया में सफलता और स्थायित्व का मार्ग प्रशस्त करता है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया

संपादक

डॉ. संजय सिंह

डॉ. वैशाली

संकलन सहयोगी

सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली

प्रसार शिक्षा निदेशालय

0151-2200505

email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया